



सलोकु ॥

बहु सासत्र बहु सिम्रिती पेखे सरब ढढोलि ॥

पूजसि नाही हरि हरे नानक नाम अमोल

॥३॥





असटपदी ॥

जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥

खट सासत्र सिम्रिति वखिआन ॥

जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ ॥

सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥

अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥


पुंन दान होमे बहु रतना ॥


सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥

वरत नेम करै बहु भाती ॥

नही तुलि राम नाम बीचार ॥

नानक गुरमुखि नामु जपीऐ इक बार ॥१॥





नउ खंड प्रिथमी फिरै चिरु जीवै ॥

महा उदासु तपीसरु थीवै ॥

अगनि माहि होमत परान ॥

कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥

निउली करम करै बहु आसन ॥


जैन मारग संजम अति साधन ॥


निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥

तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥


हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥


नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि ॥२॥





मन कामना तीरथ देह छुटै ॥
गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥
सोच करै दिनसु अरु राति ॥
मन की मैलु न तन ते जाति ॥
इसु देही कउ बहु साधना करै ॥
मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥
जलि धोवै बहु देह अनीति ॥
सुध कहा होइ काची भीति ॥
मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥
नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥३॥





बहुतु सिआणप जम का भउ बिआपै ॥

अनिक जतन करि त्रिसन ना धापै ॥

भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥

कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥

छूटसि नाही ऊभ पइआलि ॥

मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥


अवर करतूति सगली जमु डानै ॥

गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै ॥


हरि का नामु जपत दुखु जाइ ॥


नानक बोलै सहजि सुभाइ ॥४॥







चारि पदारथ जे को मागै ॥
साध जना की सेवा लागै ॥
जे को आपुना दूखु मिटावै ॥
हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥
जे को अपुनी सोभा लोरै ॥
साधसंगि इह हउमै छोरै ॥
जे को जनम मरण ते डरै ॥
साध जना की सरनी परै ॥
जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ॥
नानक ता कै बलि बलि जासा ॥५॥







सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥
साधसंगि जा का मिटै अभिमानु ॥
आपस कउ जो जाणै नीचा ॥
सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥
जा का मनु होइ सगल की रीना ॥
हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीना ॥
मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥
पेखै सगल स्रिसटि साजना ॥
सूख दूख जन सम द्रिसटेता ॥
नानक पाप पुंन नही लेपा ॥६॥





निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥
निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥
निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥
सगल घटा कउ देवहु दानु ॥
करन करावनहार सुआमी ॥
सगल घटा के अंतरजामी ॥
अपनी गति मिति जानहु आपे ॥
आपन संगि आपि प्रभ राते ॥
तुम्हरी उसतति तुम ते होइ ॥
नानक अवरु न जानसि कोइ ॥७॥





सरब धरम महि सेसट धरमु ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥
सगल क्रिआ महि ऊतम किरिआ ॥
साधसंगि दुरमति मलु हिरिआ ॥
सगल उदम महि उदमु भला ॥
हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥
सगल बानी महि अम्रित बानी ॥
हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥
सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥
नानक जिह घटि वसै हरि नामु ॥८॥३॥

